गिल्लू

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : ३
पाठ का नाम :गिल्लू
PPT-1

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

आइए बनें पंछियों का सहारा
पशु पक्षी भी हमारे मित्र हैं

लेखक परिचय

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा (२६ मार्च १९०७ — ११ सितंबर १९८७) हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं।आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है।इन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए।
1956 में भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण 'तथा वर्ष 1988 में पद्म 'विभूषण ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।इनकी रचना 'यामा' के लिए इन्हें वर्ष 1936 में 'ज्ञानपीठ ' पुरस्कार प्राप्त हुआ । इनकी कहानियों में 'गिल्लू ' एक कहानी है ।

पात्र परिचय

पाठ प्रवेश:

महादेवी वर्मा के संस्मरण 'मेरा परिवार ' से चयनित प्रस्तुत पाठ 'गिल्लू ' के माध्यम से पशु-पक्षियों की क्रियाओं का सूक्ष्म अवलोकन हुआ है, साथ ही यह भी बताया गया है कि इन्हें स्वतंत्र रखकर , अपनाकर तथा आत्मीयता देकर ही हम इनका स्वाभाविक विकास होने में मदद कर सकते हैं, जैसा 'गिल्लू 'के संदर्भ में लेखिका ने किया।

प्रस्तावना - हम अपने प्यार , अपनत्व तथा मानव से किसी भी जीव को अपना मित्र बना सकते हैं। जीव जंतुओं को प्यार तया आत्मीयता से पालकर हम उन्हें घर के सदस्य के समान रख सकते हैं। प्यार में वह ताकत होती है कि बेजुबान जीव - जंतु भी हमें सच्चे अर्थो में परिचारिका की भाँति प्रेम दे सकते हैं।

संबंधित प्रश्न –

१. हम किस प्रकार किसी भी जीव को अपना मित्र बना सकते हैं?

२. प्यार में किस प्रकार की ताकत होती है?

३. उदाहरण के तौर पर हमारा सबसे वफादार जानवर है?

सामान्य उद्देश्य –

पशु -पक्षी प्रकृति तथा हमारे समाज का अभिन्न अंग होते हैं। वे हमारे सहयोगी भी होते हैं। इसीलिए उनके प्रति हम सभी के कुछ कर्तव्य है , जिसका पालन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। पशु - पक्षियों को किसी भी तरह की हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्य – विद्यार्थी पशु – पक्षियों के प्रति प्रेम और उनके संरक्षण की भावना उत्पन्न कर सकेंगे।

पाठ का सारांश(शिक्षक द्वारा) -

इस प्रस्तुत पाठ में एक चंचल तथा तेज गति से दौड़ने वाली जीव जो गिलहरी है, उससे लेखिका के अद्भुत प्रेम का परिचय मिलता है। गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा शायद घोंसले से गिर गया है जिस पर नासमझ कौए टूट पड़े हैं। कौए उसके शरीर में अपना आहार ढूँढ़ने की चेष्टा में हैं। लेखिका की दृष्टि अनायास उस नवजात बच्चे पर पड़ी, जिसे वह बचाने का पूरा प्रयास करने लगीं। लेखिका ने ध्यान से उस नवजात गिलहरी को देखा तो कौए की चोंच के दो निशान मिले। यदि लेखिका उसका उपचार सही ढंग से नहीं करती तो शायद गिलहरी का यह बच्चा जीवित नहीं मुँह में दूध रहता । लेखिका उस गिलहरी को जिंदा रखने के लिए रुई की पतली बत्ती को दूध में भिगोकर उसके डालने लगी। पहले वह जीव मरने के समान दिख रहा था लेकिन लेखिका की सेवा से वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया। लगभग तीन दिन होते-होते वह जीव अपने पंजे हिलाने की स्थिति में आ गया और लेखिका की उँगली अपने पंजे से पकड़ने लगा।

लेखिका ने उसे एक डलिया में रखना शुरू किया। लेखिका ने उस गिलहरी की देखभाल इतनी अच्छे से की कि वह गिलहरी अब दो वर्ष का हो गया। लेखिका ने उस गिलहरी का नाम 'गिल्लू' रखा जो उनके पैरों पर चढ़ जाता था और सर से उतरकर भाग भी जाता था। गिल्लू अपनी चमकीली आँखों से लेखिका द्वारा किए गए सभी कामों को भी देखा करता था लेखिका यह बताना चाहती हैं कि छोटे से छोटे जीव भी मनुष्य के व्यवहार को अच्छी तरह से समझता है। लेखिका के घर से बाहर जाती तो गिल्लू भी दिन भर खिड़की की जाली से बाहर चला जाता लेकिन जैसे ही लेखिका घर आतीं, वह भी घर चला आता और लेखिका से अपना स्नेह जतलाने लगता। वह अब लेखिका के साथ खाना खाने भी चला आता है। लेखिका ने बहुत ही कठिनाई से उसे मेज़ पर रखी भोजन की थाली के पास बैठना सिखाया, इसका भी यहाँ वर्णन किया गया है। उस छोटे से जीव का सबसे प्रिय भोजन काजू था। लेखिका के बीमार होने पर गिल्लू लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने पंजे को हलका-हलका उनके सिर फेरता जिससे लेखिका को ऐसा लगता कि मानो कोई सेविका यह काम कर रही हो।

गिल्लू भी अपनी स्वाभाविक मौत से मरा था। किंतु उसके मरने से कुछ समय पहले लेखिका ने हीटर जलाकर उसके बदन को सेंका। उसमें गर्मी पैदा करने की कोशिश की, लेकिन लेखिका उस प्यारे गिल्लू को बचा नहीं पाई। सोनजुही की लता के नीचे मिट्टी में ही गिल्लू की समाधि बना दी। उसे सोनजुही की लता काफ़ी पसंद था, इसलिए लेखिका ने उसे उसी सोनजुही की जड़ के नीचे चिरनिद्रा में सुला दिया। छोटे-से छोटे जीव के प्रति भी लेखिका का ममत्व एवं स्नेह इस कहानी से स्पष्ट होता है।

गृहकार्य - पाठ को पढ़कर कठिन शब्दों को रेखांकित करना ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP